मन रे तू काहे ना धीर धरे

मन रे ! तू काहे ना धीर धरे
वो निर्मोही मोह ना जाने जिनका मोह करे
मन रे ! तू काहे ना धीर धरे

इस जीवन की चढ़ती ढलती धुप को किसने बाँधा
रंग पे किसने पहरे डाले रूप को किसने बाँधा
काहे ये जतन करे
मन रे ! तू काहे ना धीर धरे

उतना ही उपकार समझ कोई जितना साथ निभा दे
जनम मरण का मेल है सपना
ये सपना बिसरा दे
कोई ना संग मरे
मन रे ! तू काहे ना धीर धरे

मन रे ! तू काहे ना धीर धरे
वो निर्मोही मोह ना जाने जिनका मोह करे
मन रे ! तू काहे ना धीर धरे

स्वर : मोहम्मद रफ़ी

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/811/title/mann-re-tu-kahe-na-dheer-dhare

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |